27	कृषीवला प्रि
28	जित्या तु कृत्विः
29	सीरस्तु लाङ्गलम् ॥ द६० ॥
30	गादार्णं क्ल-
31	मीषासीते तद्एउपद्भती।
32	निरीषे कुरकं
33	पाले कृषकः कृशिकं फलम् ॥ दश् ॥
34	दात्रं लिवत्रं
35	तसुष्टा वर्णरा
36	मत्यं समीकृती।
37	गादार्णं तु कुद्दालः
38	विनित्रं ववदार्णाम् ॥ दश्य ॥
39	प्रतोद्स्तु प्रवयणां प्राजनं तोल्लतोद्ने।
40	योत्रं तु योक्रमाबन्धः
41	कारिशा लाष्टमेदनः ॥ दश्व ॥
42	मेधिर्मिषः खलेबाली खले गोबन्धरारु यर्।
43	ष्रद्रो जन्यवर्णी वृषलः पद्यः पद्यो तद्यन्यतः । दश्व ॥

28. Ackerbau? (2 W.). — 29. 30. Pflug (4 W.). — 31. 1) Deichsel eines Pfluges. 2) Furche, die ein Pflug macht. — 32. Pflug ohne Deichsel. — 33. Pflugschar (4 W.). — 34. Sichel (2 W.). — 35. Der Griff daran. — 36. Eggen. — 37. Haue (2 W.). — 38. Spaten (2 W.). — 39. Stachel, womit das Vieh getrieben wird (5 W.). — 40. Riemen, mit dem die Ochsen an den Pflug gebunden werden (3 W.). — 41. Egge (2 W.). — 42. Pfosten in der Dreschtenne, an welchen die Ochsen gebunden werden (3 W.). — 43. Çûdra (6 W.).